क्या मुझे विश्वास करने से पहले देखने की आवश्यकता है?

मैं दोबारा आपका ध्यान चाहता हूँ, और हम इस
सप्ताह के हमारे बड़े प्रश्न का उत्तर देने जा रहें हैं,

जो हैः क्या मुझे विश्वास करने के लिए
देखने की जरूरत है?

अब, हमने पहले ही स्थापित किया है
कि इस प्रश्न का उत्तर है नहीं।

हमने देखा की किस तरह कायदें-कानून के न्यायालय
देश भर में किस तरह कार्य करते हैं।

हमने देखा है कि कैसे निर्णायक मंडल बड़े
निर्णय लेते हैं, जीवन बदल देनेवाले निर्णय,

जबकी उन्होंने खुद गुनाह नहीं
देखा फिर भी।

परंतु वे क्या करते है कि गावाही को सुनते हैं,
वे आँखो देखें गवाहों को सुनते हैं।

वह यह मान चुकें होते हैं की आँखों
देखे गावह सच बोल रहें हैं,

कि वे सच्चे हैं, कि वे विश्वसनीय है,
और इस आधार पर

वे बड़े, जीवन बदल देनेवाले निर्णय
लेते हैं जो उन्होंने सुना है उसके कारण,

इसके बावजूद की उन्होंने नहीं देखा।
अब, हमारे लिए इसका क्या मतलब है?

मैं सोचता हूँ कि यह सहायक है
हमारे समझने के लिए

हम उस निर्णय तक कैसे आएं
उस व्यक्ति यीशु के बारे में।

तो हम यहाँ है, करीब दो हज़ार साल
बाद में, और अगर हम

सही समय और सही जगह पर जीवित
होते तो हम खुद देख पाते

© Lee McMunn, 2011

उन चीज़ों में से कुछ को जो घट रहीं थी।
परंतु हम वहाँ नहीं है, हम हैं क्या?

हम यहाँ है, दो हज़ार कुछ सालों बाद, और हमने नहीं देखा,

परंतु दूसरें लोगों ने देखा है, और उन्होंने
यह लिखकर रखा है। तो हमें क्या करना है?

अच्छा, हमें जो आँखों देखे गवाहों
ने कहा है और दर्ज किया है

उससे संलग्न रहना है।
तो जब आप बाइबल का पास आते हैं,

हम देखते है कि वहाँ चार पुस्तकें हैं –
मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना -

ये दावा करते हैं हमें यीशु नासरी के जीवन
की विश्वसनीय, बिलकुल सही कहानी बताने का।

वे या तो खुद आँखों देखे गवाहों के
द्वारा लिखें गए थे, या वे किसी और

आँखों देखी गवाही पर आधारित थे। और हम यहाँ है,

उनके साथ सामना करते हुए।
और जो बड़ा निर्णय लेने की हमें जरूरत है

वह है की यदि हम विश्वास करेंगे कि जो
इन पुस्तकों में लिखा है सच है।

अब, यह एक बड़ा निर्णय है क्योंकि अगर आप
अपने जीवन में उस जगह पर आते है

जहाँ आप कहते है, 'मैं विश्वास करता हूँ जो
मैंने पढ़ा वह सच है,' तब अगला तार्किक कदम

है मसीही बनना। बिलकुल, यह ऐसे
इसी तरह कार्य करता है।

इसलिए यह निर्णय इतना बड़ा हैं।

अब, हमारा मन बनाने मे मदद करने के लिए मेरे पास
उत्तर देने केलिए आज रात दो प्रश्न हैं।

पहला प्रश्न हैः क्या हम यकीन कर सकते हैं
की जो हम पढ़ रहें है वही लिखा गया था?

© Lee McMunn, 2011

यहाँ पहला प्रश्न है। और दूसरा प्रश्न यह हैः
क्या हम निश्चित कर सकते हैं

की जो कुछ लिखा गया था, और इसलिए आज जो हम पढ़ रहें हैं,

वह सचमुच घटा था? ठीक है, दो थोड़े से भिन्न प्रश्न।

पहला प्रश्न हैः क्या हम यकीन कर सकते हैं की जो
हम पढ़ रहें हैं, इस तरह की पुस्तकों में

वह सच में वही है जो लिखा गया था?

अब, आपकी पुस्तिकाओं में अधिक जानकारी देखेंगे।

परंतु उन चीज़ों में से एक के बारे में
मैं कहना चाहूँगा, क्योंकि यह प्रश्न

युगों में से विश्वासनीय स्थानांतरण का है।
यह खेल है जिसका नाम है 'फुसफुसाने का खेल'।

जब आप बच्चे थे तब आपने कभी यह खेला है?
मैं सोचता हूँ कंप्यूटर और डी.वी.डी के दिनों से पहले,

द विस्पर गेम। क्या ही उत्तेजित खेल वह था।

तो जब, आप अपने दोस्तों के साथ इकट्ठा होता

तो आप सोचते, 'आज हम क्या करें? ओह,
द विस्पर गेम। बढ़िया!'

और आप एक गोल में जमा होते है, कोई सुरुवात करता है,
और वे क्या करते हैं?

उनके पास एक छोटा संदेश हैः
और फिर वह उत्तेजित रीति से पास होता है

और दूसरा कोईः फुसफुसता है।
और वह गोल में जाता है और आखरी व्यक्ति वह संदेश बताता है,

और हम सब करते हैं, 'हा, हा, हा, हा !'
यह अद्भुत है की कंप्यूटर खोजें गए

क्योंकि यह खेल बहुत उत्तेजित है, नहीं क्या?
और क्या आप करना चाहेंगे?

अब, कुछ लोग सोचते है की बाइबल कई
सदियों से होता चला आया है

© Lee McMunn, 2011

तो वह थोडा इस विस्पर गेम की तरह है। तो इसलिए

हम जो आज पढ़ते हैं उसपल सचमुच विश्वास नहीं कर
सकते क्योंकि इन सालों में सचमुच यह बदल गया है।

अच्छा, यह खराब उदाहरण है, नहीं क्या?

क्योंकि विस्पर गेम का मुक्य उद्देश्य क्या करना है?
कि यह करना की

दूसरे व्यक्ति को यह सुनने केलिए मुश्किल बना दें।
तो आप फुसफुसाने जा रहें है

और आप शायद जानबूजकर,
अगर आपने इसे कभी खेला है तो...

मैं नहीं जानता की आपने इसे ऐसे खेला होगा....
आप जानबूजकर चीज़ों

को बदलते हो, और दिन के अंत मैं बड़ा मजा तब है

जब आखरी व्यक्ति व्यक्ति बेवकूफ लगता है।

और आप कहते है हाँ। 'क्या! हम इसे वापस खेलें?'

परंतु यह कुछ भी नहीं की क्या सदियों में हो रहा था

जैसे ही बाइबल आगे जा रहा था।
मुख्य उद्देश्य यह था की भविष्य की पीढियों को

यीशु के बारे में विश्वासयोग्य सच पेश करें।
यह बहुत ही उत्तेजक था,

सबसे महत्वपूर्ण संदेश सदा से,
यीशु की पहचान और शिन के बारे में,

और बड़ी बात, दिन के अंत में, किसी को बेवकूफ नहीं बनाना।

यह इसके लिए की वे पढ़ सकें, पीढ़ियों से पीढ़ियों से पीढ़ियों तक

की उन पिछले सालों में क्या हुआ है।

अब, मान्य करते हुए,
कुछ गलीतीयाँ हुई जैसे की चीज़ों की नकल सदियों से उतारी गई,

परंतु महान समाचार यह है की हमारे पास कई सारी प्रतियाँ है
और बहुत सारी पांडुलिपियाँ है

© Lee McMunn, 2011

जो विभिन्न दशों में और सदियों में से पाई गई है,

इतनी सारी प्रतियाँ कि जब आप इसे इकट्ठा करते हैं?
हम यह सचमुच इनपर यकीन कर सकते हैं

कि इन सारें गुजरें बर्षों में जो कुछ लिखा गया था।
तो आप अस्वस्थ हो सकते है

जब आप इस तरह की पुस्तकों को पढ़ते है,
कि जो आप ज आप पढ़ते है

वह उन गुजरें सालों में लिखा गया था।

अब, दूसरे प्रश्न के बारे में क्या? क्या एक यकीन कर सकते है

कि जो हम पढ़ रहें है सचमुच हुआ है?
अच्छा, मैं आपसे कुछ कारण बाँटना चाहूँगा

जो मुझे समझाने है जब मैं इस तरह के पुस्तकों को पढ़ता हूँ

कि मैं विश्वास करता हूँ जो अंदर है।
अब, पहला मैंने पहिले ही बतायाः

इमानदारी। मुझे यह पसंद है। हम इसे बार-बार देखते है

वे सिर्फ सच बताते है। वे जो चीज़े शर्मनाक है उन्हें एअरब्रश

नहीं करते परंतु वे उसे अंदर डालते है।
और यह सिर्फ थोमा ही नहीं।

वहाँ कई सारे उदाहरण है जहाँ वे सिर्फ बताते है जैसे वह घटे है।

और मैं सोचता हूँ कि यह प्रमाणता की एक महान परिक्षा है।

वे इतिहास के रीति से भी एकदम सही है।
जब समाचार पक्ष लोग का उल्लेख करते है,

वास्तव में के ऐतीहासिक लोग
और वास्तव में की ऐतिहासिक जगाहें

बार बार वे एकदम सही पाते हैं।
और आप इसे मान्य करेंगे, क्या प नहीं?

अगर वे उसे गलत पाएँ,
अच्छा सचमुच आपको उसके साथ मुद्दे होंगे की जो वह कहें है।

© Lee McMunn, 2011

तीसरी बात, वे साफ सूथरे नहीं है।
अब, मेरा मतलब क्या है, 'वे साफ सुभरे नहीं है?'

उदाहरण केलिए, जब आप पुनरुत्थान की बात को

सभी विभिन्न-सुसमाचारों में पढ़ते है, वे वास्तव में सरिखी नहीं।

अब, वे विरोधाभासी भी नहीं, परंतु वे साफ-सुथरे नहीं।

वह है आपको बैठ कर इसपर कार्य करना है,
कैसे यह सब एक साथ जोड़ सकते हैं।

परंतु जब आप ऐसा करते हैं,
यह सब एक साथ जोड़े जा सकते हैं। परंतु वे साफ-सुथरे नहीं है।

और मैं सोचता हूँ यह मेधावी है। क्योंकि अगर वे साफ-सुधरे होते

तो आप यह सोचते की वे सब इकट्टा हुए है

और उन सभों कहा है, 'ठीक,
कौनसी कहानी हम लिखना चाहते हैं?'

परंतु यह वह नहीं जो आप पढ़ते हैं।
वे विरोधाभासी भी नहीं, परंतु वे साफ-सूधरे नहीं।

परंतु चौथा कारण, और साथ लेते हुए यह मेरे लिए बहुत ठोस है,

परंतु चौथा कारण है कि मैं क्या पढ़ता हूँ इस तरह की पुस्तकों में

वह बहुत ही प्रशंसनीय व्याख्या है उन शिष्यों को बदलने में।

सोचिए की वे कैसे थे यीशु के मृत्यु के पश्चातः

उन्होंने अपने वर्षों को इस व्यक्ति के पीछे होने में लगा दिए,
और अब वे भयभीत है

हौसला खे हुए, उनकी दुनिया टूट के बिखर चूकी है।
परंतु क्या हुआ?

यह जवान लोग बदल गए और यीशु के
और शक्तिशाली प्रचारकों बन गया

शारीरिक पुनरुत्थान के शक्तिशाली उपदेश बन गे अब, किस चीज़ ने

उन्हें कार्यों से साहसी उपदेशक बना दिया?

अच्छा कुछ लोग कहेंगे, 'यह चीज़, सिर्फ ऐसी ही बनाई गई

© Lee McMunn, 2011

ओर उन्होंने इसे अच्छा बनाया।'
परंतु इसका आपके पास सबूत क्या है?

क्या वे उसे बनाएँगे? यह सुरुवात के मसीही,
उनके इस जीवन में पाने केलिए कुछ नहीं था।

उनका छल किया गया, उन्होंने सहा,
बहुत से लोगों को मार डाला गया उनके विश्वास करने की वजह से।

अब, यहाँ मेरा प्रश्न है आप केलिएः क्या आप झूट केलिए मरेंगे?

अच्छा, बहुत सारे लोग दुनिया भर में झूठ केलिए महते है,
तो मुझे अच्छा प्रश्न पूछने देः

क्या आप झूठ केलिए मरेंगे जो आप जानते है झूठ है?

क्योंकि यही वे किए होते अगर उन्होंने ऐसे ही बनाया होता।

इस जीवन में उनको पाने केलिए कुछ नहीं था
और दरअसल वे एक ऐसी परंपरा से आएं थे।

जो परमेश्वर पर विश्वास करते थे,
और न्याय के परमेश्वर में विश्वास करते थे,

तो अगर वे ऐसा करते, अगर वे झूठ बोलते

तब भी उनके पास इस जीवन में पाने जैसा कुछ नहीं था

उनको आनेवाले जीवन में सबकुछ खोने केलिए था।

आप यह नहीं कह सकते की उन्होंने ऐसा किया

इकट्टा करते हुए, यह एक संचई केस है। इकट्टा करते हुए

मैं सोचता हूँ यह कारण मेरे लिए बहुत ठोस है,
की हम इस तरह की पुस्तकों को पढ़े

और विश्वास करें कि जिन घटनाओं के बारे में वे बात करते है

वैसे ही हुई जैसे वे उनका उलेख करते हैं।

अच्छा, मुझे पता नहीं आप इससे क्या करेंगे। क्यं ना आप

अपने टेबलों पर कुछ क्षण बिताएँ
और देखें अगर पास भी आस्वस्थ है

की आप विश्वास करें जो इस तरह की पुस्तकों में लिखा गया है।

© Lee McMunn, 2011

Identity – Who is God? Who are we?

© Lee McMunn, 2011

All rights reserved. Except as may be permitted by the Copyright Act, no part of this publication may be reproduced in any form or by any means without prior permission from the publisher.

Published by 10Publishing, a division of 10ofThose Limited.

All Hindi scripture quotations are taken from Hindi-O.V. © The Bible Society of India.

10Publishing, a division of 10ofthose.com
Unit 19 Common Bank Industrial Estate, Ackhurst Road, Chorley, PR7 1NH, England.
Email: info@10ofthose.com
Website: www.10ofthose.com